

रूह की पाकीज़गी

जन्नत की चाबी

बिस्मिल्लाह हिर्रमान निर्हीम

★ नूर (Divine Light), शांति, सूकून (सकीना), आसानी (आफियत), तौफीक और खुशियों का मालिक सिर्फ अल्लाह रब्बुल इज्जत है। इसी लिये अल्लाह ताला ही से मांगो कि अल्लाह ताला उन नेमतों को दिलों में और दुनिया की चीजों में डाल दे। ध्यान में रखना कि दुनिया की ऐश व इशरत और सुसती काहिली हमारे दिल, दिमाग और बदन को छू न डाले। अगर मुखतलिफ अंदाज़ की नागवारियाँ, रूकावटे और इमतिहान (आज़माईश) से घिरे तो पहले थोड़ी देर खामोश हो जाना, सब्र कर लेना, मुजाहिदा बरदास्त करना और सोचना यह नागवारी और मसीबत क्यों आई? मुझ से कोई गुनाह तो नहीं हो गये? कोई गलती तो नहीं कर डाली? उस के बाद अपनी निगाह डालना, सोच, समझ, बोल और जिस्म की हरकत पर, यह देखना कि कहीं वह अल्लाह ताला और मुहम्मद सः की सुन्नत की ना फरमानी न करें बल्कि उन हालात में अल्लाह ताला को ज़्यादा से ज़्यादा राजी करने की फ़िक्र करें। मुखतलिफ दिक्कते और हालात की वजह से घबरा न जाना, चाल में कोई ग़लती न कर डालना, बल्कि तमाम जिम्मेदारियों और हूकूक को अच्छी तरह पूरा करते रहना और मरने के बाद आने वाली जिन्दगी (आख़िरत) के लिये सामान जमा करते रहना। अगर हमने सही इल्म हासिल नहीं किया, और अंजाम से बेख़बर रहे, सही उसूल को नहीं अपनाए और दावत के काम के लिए सलाहियते, जान, माल और वक्त की कुरबानी नहीं दी तो राहत व आराम, खतरे में पड़ेगा, आख़िरत, तन्दुरूस्ती, माली हालत, पैसा, घरेलू जिन्दगी, तालुक़ात, बच्चों की तालीम व तरबीयत सब खतरे में पड़ेगा, रूकावटे और बे बरकती पैदा हो जाएगी असमानी बरकते रूख जाएगी। क्योंकि दावत के काम के लिए कुरबानी देने से घर छोड़ने से अल्लाह की मदद और नुसरत उतरती है और इसी मदद को देखकर अल्लाह के गैबी निजाम पर इमान मजबुत होता है और हूजुर (सः) के तरीके में कामयाबी नजर आती है। इसी वजह से आज सारी दुनिया में दावत के काम में लगने के लिए मेहनत हो रही है। दुनिया के ख्वाहिस के पीछे न दोड़ना क्योंकि ख्वाहिस की कोई हद नहीं होती, अलबत्ता बकदरे जरूरत लगने में कोई हर्ज नहीं। जिन्दगी गुज़ारने के सही उसूलों को अपनाना और अपने जिम्मेदारी और हूकूक को अच्छी तरह अदा करना। बहुत सारे काम हम एक साथ नहीं कर सकते, इस लिए एक काम के बाद, दूसरे काम को शुरू करने से पहले सुईच ऑफ और ऑन होना जरूर सीखना। ऐतेदाल का पहलू जरूर अपनाए। हक़ और हद को हर हाल में याद रखना। जुल्म और ज़्यादतीयों से अपने हाथों, अपने आपको हलाकत में न डालों।

★ हम लोग कमज़ोर है, इमान, यकीन और खुदा पर भरोसा हमारा सबसे बड़ा सरमाया और ताक़त है। इसी सरमाया को अपनी ताक़त और हिम्मत के मुताबिक, अपनी ख्वाहिस और जी की चाहत को कुरबान करना—अल्लाह के हुकूम, हुज़ूर सः की सुन्नत की इत्तेबा और दावत के काम के लिए। इस में मुकाबला जरूर होगा “नफ़स और हुकूम की” इन हालत में थोड़ा सब्र कर लेना, मुजाहिदा बरदाशत कर लेना, राहत आराम और दुनिया के असबाब को थोड़ी देर के लिए छोड़ देना या कुरबान करना मगर खुदा के हुकूम को टूटने ना देना। अगर हुकूम पुरा हो गया तो अल्लाह कामयाब करेगा अपनी कुदरत से। सबसे पहले रूह और दिल को पाक करेगा, इसके बाद दुनिया के असबाब में, आसमान से बरकत नाज़ील करेगा, राहत, आराम, सकून मिलेगा और मोत के वक्त जन्नत की खुश खबरी सुनायेगा जो सबसे बड़ी कामयाबी होगी।

★ अपने मन की (ख्वाहिशों) की ऐसे तर्बियत करना कि वह दिलों में कोई ग़लत बात न डालने पाये, बल्कि खुदा का डर और मुहम्मद (सः) की आदत व अखलाक को दिलों में डाले। जैसे मेहनत होती है, वैसी फ़िक्र दिल और दिमाग में पैदा होती है, इसीलिए वक्तन—बवक्तन इमान, यकीन, खुदा का खौफ, दुआ और इस्तगफार से, अपने दिल और दिमाग को दुनिया के असरात, लोगों के असरात और गलत सोच से पाक साफ़ रखना। अपने आप को सारी जिन्दगी गुनाह गार समझना, कसूरवार समझना खुदा के सामने अपने पिछले किये हुए गुनाहों को याद करके रोने की कोशिश करना। इन्शाअल्लाह इस से दिल में नरमी और आजीजी पैदा होगा। और हर वक्त हर एक के सामने अपनी इज्जत और वकार (Self respect & Dignity) को बाकि रखना और जुबान के बोल और बदन की हरकत को सभाल के रखना क्योंकि आमाल पर खुदा की तरफ से फ़ैसला उतरेगा—जैसी करनी वैसी भरनी।

★ तुम जमीन वालों पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा। अपने बदन को हज़रत मुहम्मद (सः) की सुन्नते, आदत और अखलाक, और कहना (इश़ादात) की लगाम लगाना और अल्लाह ताला की मनशा और हुकूम की तम्बीह करना जिस तरह घुड़सवार (Jockey) अपना घोड़े को ट्रेनिंग देते है, इन्शाअल्लाह हमारे दिल दिमाग (ख्वाहिश), सुसती काहिली और दुनिया की ऐश इशरत को छोड़ के अल्लाह और उनके रसूल (सः) की गुलामी करने वाले बनेंगे, जिस की वजह से बदन से जानवर पन खत्म हो जाएगा और हमारा बदन नाजाएज़ (हराम) और बरबाद करने वाली मन की चाहत (ख्वाहिश) को कबुल करने से रूक जाएगा (Self Control)। सही इस्म हासिल करना शैतान के जाल से बचने के लिए। सही इल्म और नेक लोगों की सोहबत और तज़ुरबेकार का मशवरा, जिन्दगी का अहम ऊमूर है। नफ़स, शैतान के जाल से बचने के लिए। (फीतना, नुकसान, हलाकत और ज़िल्लत)। मन की गुलामी और जी की चाहत के वजह से बड़े—बड़े आदमी शैतान के जाल में फसें मशवरा नहीं करने की वजह से, क्योंकि अपने आप को बहुत अकलमंद समझते थे। अगर हमने सोचने में, समझने में, बात चीत में और अमल व हरकत में कोई ग़लती की, तो हमको एक दिन अपनी जेब से भरना पड़ेगा।

★ अपने दिमाग को 7 बातों की ट्रेनिंग देना: अपनी हरकते और अमल के वक्त उन सात बातों को लागू करना (Implement) वह सात बात यह है, जिस वक्त जो काम करों उस वक्त उस काम की तरफ पुरा ध्यान रहे (Focus) और उस काम के सही उसूल को अपनाए, सही इल्म, मेहनत, तन मन, धन लगाना, खामोशी, खुश मिजाज़ी, पुख्ता इरादा और चोख़बना रहना (Sharp Memory) यह सिफात कामयाबी हासिल करने की चाबी है।

★ हम यह कहते है कि शैतान तवज्जो और सोच में (Focus & Thinking) घुस कर अहम चीजों को भुला देता है और वक्त को जाया करता है, और बेकार की चीजों में लगाकर आख़िर में जिम्मेदारी के सही उसूल से भटका देता है जिसकी जवह से आख़िरत, तन्दुरूस्ती, परेशानी माली हालत, घर की जिम्मेदारी और तालुक़ात एक के बाद एक परेशानी सिर पर बोझ बनकर रहती है। कभी भी किसी चीज़ का इतना बोझ दिल और दिमाग में नहीं रखना जिसकी वजह से दिल और दिमाग बेकाबू हो जाए।

★ नफ़स शैतान 7 चीजों को बरबाद करते है: तवज्जो (फोकस), सोच, समझ, हर काम के उसूल, भूल, यकसुई और तरजीह। दिल को इमान, यकीन और तवकुल से मजबुत रखे, तेज़ निगाह रखना “तवजो, सोच और ख्वाहिस पर, कही नफ़स, शैतान उसको गलत इस्तेमाल न हाने दें।

★ खुदा की याद को (जिर्क) और सुन्नत दिल में इस तरीके से डालना जिसके नुर से दिल, दिमाग और बदन शांत खामोश हो जाए, और उसका रूख (Direction) सीधे लाईन पर रहे, और रोज़ाना की जिन्दगी में हुज़ूर (सः) और उनके साथी सहाबा किराम (रजि0) की जिन्दगी को अपनी सोच और समझ मे इस तरीके से डालना जिसकी वजह से दुनिया की मोहब्बत, मज़ा और सुस्ती काहिली बदन से खत्म हो जाए या कम से कम घट जाए। ध्यान रखना गुनाह, भुल, बेकार की सोच, दिमाग को इधर उधर भटका के न ले जाए।

एक बात ध्यान में रखना, तुम को अल्लाह और इन्सान देख रहे हैं, और इन्सान तुम्हारे बारे में अपने दिमाग में कुछ बातें रख भी रहे हैं। इस लिए हर वक्त अल्लाह से डरते रहना। होगा तो वही जो अल्लाह चाहेगा इसमें कोई शक नहीं। हम लोग कमज़ोर हैं इसलिए अल्लाह से आफियत और आसानी जरूर मांगा करें, और दिल को अल्लाह की तरफ मुत्तवज्जो रखें, जिस से दिल अल्लाह के नूर, मदद और आफियत के खज़ाने के साथ वबस्था हो जाये।

“दिल के राज” और यह “मजमून” इस वेब साईट से डाउन्लोड करें।

www.wisdominlife.net